दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 वोटरों में भरपूर उत्साह देखने को मिला

5 मतदान में महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ा

6 ससुर के बोए कांटे बहू की राह में बन रहे शूल...

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 45 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 03 जून, 2024

गर्मी ने मतदाताओं को किया बेहाल

वाराणसी के कई बूथों पर लोग गर्मी से परेशान रहे। महिला अपने हाथ मतदाता पर्ची से हवा लेते नजर आईं। वहीं, पुरुष गमछा से अपना पसीना पोछ रहे थे।

महिलाओं में दिखा उत्साह

वाराणसी के डीएम अपनी पत्नी के साथ, सीपी और मंत्री रविन्द्र जायसवाल। –

महराजगंज लोकसभा क्षेत्र में कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया ने बूथ संख्या 193 पर मतदान किया।

अजय राय, अनुप्रिया पटेल, अफजाल अंसारी –

जाने-माने सितार वादक पद्मश्री पंडित शिवनाथ मिश्र एवं देवब्रत मिश्र अपने परिवार समेत वोट देने पहुंचे।

जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने अपने पैतृक गांव मोहनपुरा गाजीपुर में मतदान किया।

बख्तियारपुर बूथ संख्या 236 पर सीएम नीतीश कुमार के बड़े भाई सतीश कुमार और भाभी गीता देवी ने डाला वोट।

घोसी विधानसभा क्षेत्र के किसान भवन मतदान केंद्र संख्या 167 पर वोटरों ने डाला वोट।

सम्पादकीय

पाप–पुण्य के रजिस्ट्रार चित्रगुप्त की भूमिका में नरेन्द्र मोदी

मोदीजी को इसलिये पाप–पुण्य के पीछे जाकर इस योजना के बाबत लोगों को बताना पड़ा है क्योंकि कुछ अर्से तक तो लोगों ने इसे सुना क्योंकि मोदी इसका बहुत प्रचार करते रहे थे। अब विपक्ष ने इस योजना को लेकर मोदी की कड़ी आलोचना शुरू की है। कई नेताओं ने सवाल करने शुरू किये कि क्या मोदी यह राशन अपने खर्च पर लोगों को दे रहे हैं। लोग यह भी जान गये कि देश में खाद्यान्न भंडार अगर भरे हुए हैं तो यह वर्षों की किसानों की कड़ी मेहनत और पूर्ववर्ती सरकारों की देन है पाप–पुण्य की अवधारणा पूरी दुनिया में है। इसका उद्‌गम धर्म है। प्रकारान्तर से हर धर्म ने पाप क्या है और पुण्य क्या है, इसकी व्याख्याएं अपने–अपने हिसाब से की हैं। जब तक समाज आधुनिक नहीं था तब तक लोगों के अच्छे–बुरे कर्मों की शिनाख्त उस समाज को चलाने वाले धर्म और उसके पुरोहितों व श्रेष्ठी वर्ग के हाथ में थी। यह वर्ग तय करता था कि किसने पाप किये हैं और किसने पुण्य। पापियों को सजा देने और पुण्यकर्मियों को पुरस्कृत करने का काम राजा का होता था। दुनिया का इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि सजाओं और पुरस्कार की व्यवस्था में एकरूपता नहीं रही। राज्यों के शासकों के विचारों व उनकी मान्यताओं के अनुसार न्याय व्यवस्थाएं बदलती रही हैं। किसी देश में एक राजा की सत्ता जाने के बाद जब दूसरा राजा गद्दी पर बैठता था तो उस देश की पूरी व्यवस्था बदल जाती थी। यहां तक कि पुत्रों की शासन प्रणाली अपने पिता से अलग किस्म की हुआ करती थी। असली बात यह है कि किसी भी राज्य की न्याय प्रणाली राजा के व्यक्तिगत मत तथा उन्हें प्रभावित करने वाले पुरोहितों, मंत्रियों एवं सेनापतियों के माध्यम से बनती–बिगड़ती रही है। कई बार तो एक धर्म को मानने वाले राजा के पतन के बाद जो अगला गद्दीनशीन होता था उसकी धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप रातों–रात शासन प्रणाली ढल जाती थी।

इस व्यवस्था में अनेक दोष थे। पहला तो यही कि मान्यताएं समय–समय पर बदलती रहती थीं। दूसरे यह कि सबके लिये कानून अलग–अलग थे जो पाप व पुण्य का निर्धारण करते हों। तीसरे, अपराधों की व्याख्या भी निश्चित नहीं होती थी। शासकों ने जैसा सोच लिया, वही अंतिम सत्य मान लिया जाता था जिसके खिलाफ न तो सुनवाई हो सकती थी और न ही पुनर्विचार। इस गड्डमड्ड और व्यक्तिगत या कोटरी की सनक से परिचालित न्याय प्रणाली को शनैः शनैः एक सुसंगठित शासन प्रणाली ने स्थानापन्न किया। मध्ययुग से आधुनिक काल आने में ढाई–तीन सौ साल लग गये। लोकतांत्रिक रूप से परिपक्वता हासिल कर चुके देशों में तो इस आधुनिक प्रणाली का प्रकाश जगमगा रहा है लेकिन अनेक देश अब भी मध्ययुग में जी रहे हैं। उसके लिये कहीं अब भी जारी राजतंत्र जिम्मेदार है तो कहीं धर्मराज्य। कहीं सामंती व्यवस्था तो कहीं सामाजिक कारण। भारत को डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर का वरदान है जिन्होंने सामंतवादी सामाजिक व्यवस्था के बावजूद रातों–रात एक ऐसी शासन प्रणाली देशवासियों को सौपी जिसके चलते वे 'मूक प्रजा' से 'अधिकार सम्पन्न नागरिक' बन गये। न केवल शासन प्रणाली बदली वरन समानता, स्वतंत्रता एवं बन्धुत्व के मूल्यों को संविधान में अंतगुंफित किया गया। यह संविधान एक सुव्याख्यायित व सुपरिभाषित है जिसमें कहीं कोई भ्रम या उलझाव नहीं है। उधर स्वतंत्रता मिलते–मिलते अंग्रेजी शासन व्यवस्था ने भारत में अपराध व न्याय संहिता को भी विकसित व लागू कर ही दिया था। अब देश की लोकतांत्रिक प्रणाली में पाप–पुण्य के लिये जगह बची ही कहां रह गयी है? वैसे भी समाजशास्त्रियों के अनुसार जब तक संगठित कानून नहीं था तब तक लोगों को भयभीत करने और लालच देने के लिये इसका निर्माण हुआ था। ऐसे में समझना होगा कि जब आधुनिक मानकों पर खरी उतरती हुई एक स्वतंत्र और ज्यादातर निष्पक्ष न्यायपालिका है तब भला देश के सर्वोच्च पद पर विराजे हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लोगों को पाप–पुण्य के आधार पर उन्हें वोट देने के लिये प्रेरित करने की ज़रूरत क्यों आन पड़ी? तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने को आतुर मोदी ने लोकसभा चुनाव के लिये एक प्रचार सभा में जो कहा उसका आशय यह था कि कोरोना काल के बाद शुरू की गयी योजना के अंतर्गत 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन देकर उन्होंने पुण्य कमाया है। उन्हें वोट देने से लोगों को पुण्य मिलेगा।

अप्रत्यक्ष रूप से उन्होंने कह दिया कि जो उन्हें वोट नहीं देगा वह पाप का भागीदार बनेगा। एक तरह से वे लोगों को याद दिलाना चाहते थे कि उन्होंने लोगों के लिये 5 किलो निशुल्क राशन की योजना लाई है जो अगले 5 वर्षों तक जारी रहेगी। यह एक तरह से एहसान जताने जैसा ही है। मोदीजी को इसलिये पाप–पुण्य के पीछे जाकर इस योजना के बाबत लोगों को बताना पड़ा है क्योंकि कुछ अर्से तक तो लोगों ने इसे सुना क्योंकि मोदी इसका बहुत प्रचार करते रहे थे। अब विपक्ष ने इस योजना को लेकर मोदी की कड़ी आलोचना शुरू की है। कई नेताओं ने सवाल करने शुरू किये कि क्या मोदी यह राशन अपने खर्च पर लोगों को दे रहे हैं। लोग यह भी जान गये कि देश में खाद्यान्न भंडार अगर भरे हुए हैं तो यह वर्षों की किसानों की कड़ी मेहनत और पूर्ववर्ती सरकारों की देन है जिन्होंने हरित क्रांति जैसी विभिन्न योजनाओं के जरिये देश को खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर ही नहीं बनाया वरन युद्ध या किसी प्रकृतिक आपदा के अंतर्गत अगर देश में उत्पादन घटे या न हो तो भी देशवासियों के भूखों मरने की नौबत न आए। दूसरे, लोग यह भी जान गये कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने ही नागरिकों को भोजन का अधिकार दिया था। मोदी को 5 किलो मुफ्त राशन का ढिंढोरा पीटने में अड़चन आने लगी जब कांग्रेस ने ऐलान किया कि उनकी सरकार बनी तो हर माह 10 किलो राशन निशुल्क दिया जायेगा। भाजपा के पास इसका तोड़ नहीं है।

मोदी के ही साथ पूरी भारतीय जनता पार्टी को परेशानी इसलिये भी है क्योंकि उनका यह अनुमान गलत निकला कि महंगाई व बेरोजगारी के मुद्दे राममंदिर के कारण दब जायेंगे। ऐसा हुआ नहीं। उल्टे, ये मसले लोगों की चिंताओं का सबब और किसी के पक्ष में वोट डालने के लिहाज से विचार करने के प्रमुख आधार बन गये। बामुश्किल 6 प्रतिशत के लिये ही अयोध्या का राममंदिर महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह शायद वह सिलेबस था जिसकी तैयारी मोदी एवं उनकी पार्टी ने परीक्षा हॉल यानी चुनावी अखाड़े में आने के पहले बिलकुल नहीं की थी।

मोदी का वह पैंतरा भी काम आता नहीं दिख रहा है जिसमें वे हिन्दू–मुस्लिम कर ध्रुवीकरण करें और बाजी मार ले जायें। हालांकि अब भी वे इसकी कोशिशें कर रहे हैं। कभी वे कहते हैं कि 'कांग्रेस के घोषणापत्र (न्याय पत्र) पर मुस्लिम लीग की छाया है' तो कभी कहते हैं कि 'कांग्रेस की सरकार जनता से सोना लेकर कई बच्चों वाले (मुस्लिम) को बांट देगी।' या फिर 'इंडिया वाले मंगलसूत्र छीनकर मुसलमानों को दे देंगे।' मोदी के भाषण ध्रुवीकरण के एजेंडे के बिना पूरे नहीं होते। अपनी प्रचार सभाओं या साक्षात्कारों में विकास को लेकर वे कोई बात नहीं करते। उनका फोकस जहां हिन्दू वोटों के ध्रुवीकरण पर रहा वहीं इंडिया ने उनकी पिच पर जाने से इंकार करते हुए रोजी–रोटी, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के मुद्दे सत्यता व सघनता से उठाये। लोकसभा का एक ही चरण बचा रह गया है जिसमें 57 सीटों पर 1 जून को मतदान होगा। वाराणसी की सीट भी है जिस पर खुद मोदी तीसरी बार प्रत्याशी हैं। स्थानीय एवं राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर कांग्रेस समेत इंडिया सक्रिय है। इतना ही नहीं, विपक्षी गठबन्धन ताकतवर बन चुका है। उनके कई नेताओं को जेल में डालने और वित्तीय संसाधनों की कमी के बावजूद वह भाजपा का डटकर मुकाबला कर रहा है। ऐसे में मोदी चित्रगुप्त बनकर मतदाताओं को उनके पाप–पुण्य गिनाते हुए मतदान केन्द्रों तक ठेलने की कोशिश करें तो आश्चर्य नही।

4 जून को लोकसभा के नतीजों से तय होगा नया राजनीतिक समीकरण

4 जून के चुनाव नतीजे दिखायेंगे कि चुनाव के बाद का परिदृश्य भारतीय गठबंधन को कैसे प्रभावित करता है, उसे तोड़ता है या मजबूत करता है। वे यह भी संकेत देंगे कि क्या भाजपा अपनी हैट्रिक के साथ और अधिक अहंकारी हो जायेगी? भाजपा की लगातार तीसरी जीत पार्टी को अपने हिंदुत्व कार्यक्रम को और अधिक जोश के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। 2024 के लोकसभा चुनाव समाप्त हो रहे हैं, और परिणाम 4 जून को आयेंगे। चुनाव के बाद का परिणाम केवल विजेताओं और हारने वालों के बारे में नहीं है। यह केवल प्रत्याशित परिणामों से कहीं अधिक के बारे में है। इसमें अप्रत्याशित गठबंधनों की संभावना, सत्ता की गतिशीलता में नाटकीय बदलाव और नयी राजनीतिक ताकतों का उदय शामिल है, जिनका अभी खुलासा होना बाकी है।

चुनाव में भाजपा की संभावित जीत एक महत्वपूर्ण बात है जो राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दे सकती है। हालांकि, परिणाम अनिश्चित है, दो संभावित परिदृश्य हैं, जिनमें से प्रत्येक के निहितार्थ हैं। एक परिदृश्य में भाजपा के लिए भारी जीत की भविष्यवाणी की गयी है, संभवतः 400 से अधिक सीटें भी। दूसरा परिदृश्य कम सीटों के साथ भाजपा के लिए अधिक मामूली परिणाम का संकेत देता है।

भाजपा की भारी जीत के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। सबसे खराब स्थिति में, यदि भाजपा कम सीटें जीतती है, तो भी पार्टी अन्य दलों से समर्थन प्राप्त कर सकती है। यदि पार्टी 2019 के चुनाव की तुलना में कमसीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरती है, तो उसके पास कुछ तटस्थ दलों की मदद से सरकार बनाने की वैकल्पिक योजना–ब (प्लान–बी) भी है।

कांग्रेस पार्टी द्वारा लिये गये रणनीतिक निर्णय, जैसे चुनाव लड़ने वाले निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या कम करना, भारतीय राजनीति की गहराई और जटिलता को उजागर करते हैं। प्रत्येक कदम एक बड़े लक्ष्य की ओर एक सुविचारित कदम है। शनिवार को लोकसभा चुनाव के छठे चरण के समापन के साथ, कांग्रेस ने दावा किया कि भाजपा की किस्मत 'लगभग तय' है, इंडिया ब्लॉक पहले ही 272सीटों के आधे आंकड़े को पार कर चुका है और कुल 350 से अधिक सीटों की ओर अग्रसर है।

भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इंडिया गठबंधन का गठन पिछले साल 26 विपक्षी दलों ने एकजुट होकर मोदी से लड़ने के लिए किया था। हालांकि, अगर भाजपा सत्ता में लौटती है, तो गठबंधन को एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। कुछ साझेदार, जैसे कि तृणमूल कांग्रेस और आप, ने लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के साथ पूरी तरह से गठबंधन नहीं किया है, जिससे इंडिया ब्लॉक की स्थिति कमजोर हो गई है। भाजपा की जीत से इंडिया अलायंस की रणनीति का पुनर्मूल्यांकन हो सकता है, तथा कुछ साझेदार वर्तमान इंडिया गुट से दूरी बनाना चुन सकते हैं।

यदि भाजपा अधिक सीटें जीतती है, तो छोटी पार्टियां गठबंधन में शामिल होने के लिए दौड़ सकती हैं। यह भीड़ विजयी पक्ष के साथ जुड़ने की उनकी इच्छा से प्रेरित हो सकती है, जो चुनाव के बाद के परिदृश्य को प्रभावित कर सकती है। हालांकि, गठबंधन में शामिल होने की यह हड़बड़ी सिर्फ राजनीतिक हितों से प्रेरित नहीं हो सकती है। कुछ दल मोदी का विरोध करना चाहते हैं, जबकि अन्य गठबंधन को एक असफल प्रयास के रूप में देखते हैं।

इसके परिणामस्वरूप नवगठित इंडिया गठबंधन कमजोर हो सकता है, क्योंकि इस गठबंधन में कई अच्छे दोस्त हैं जो केवल अपने स्वार्थ के आधार पर किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन कर सकते हैं। भाजपा की अधिक सीटें हासिल करने या अन्य दलों से समर्थन हासिल करने की क्षमता कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। यह राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित कर सकता है, जिससे संभावित रूप से भारतीय गठबंधन सहित राजनीतिक ताकतों का पुनर्गठन हो सकता है। भाजपा ने कुछ महत्वपूर्ण सहयोगियों को खो दिया, जैसे शिवसेना और अन्नाद्रमुक के धड़े। लेकिन पार्टी को 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले टीडीपी वापस मिल गई है।

भाजपा नवीन पटनायक, जगन मोहन रेड्डी, के चन्द्रशेखर राव, मायावती और अन्य जैसे प्रभावशाली नेताओं के नेतृत्व वाली पार्टियों से समर्थन मांग सकती है। हालांकि किसी भी गठबंधन के साथ ये अभी शामिल नहीं हैं। इन नेताओं का महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव है और उन्होंने अतीत में भाजपा की मदद की है जब सत्तारूढ़ दल को उनकी जरूरत थी। चुनाव के बाद के परिदृश्य में उनकी संभावित भूमिका राजनीतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से आकार दे सकती है।

अगर इंडिया ब्लॉक का प्रदर्शन खराब रहता है तो शिवसेना का उद्धव ठाकरे गुट और शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी भी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन कर सकती है। दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल महत्वाकांक्षी हैं और उनकी नजर प्रधानमंत्री पद पर है। वह विपक्ष में रहेंगे। केजरीवाल ने भविष्यवाणी की कि अगर 4 जून को मोदी दोबारा जीते तो वह उद्धव ठाकरे, शरद पवार, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे को जेल में डाल देंगे। उन्हें भी वापस जेल भेजा जायेगा। केजरीवाल ने भाजपा विरोधी कड़ा रुख अपना लिया है और आप के राजनीतिक भविष्य के लिए उन्हें इस पर कायम रहना होगा। 4 जून के चुनाव नतीजे दिखायेंगे कि चुनाव के बाद का परिदृश्य भारतीय गठबंधन को कैसे प्रभावित करता है, उसे तोड़ता है या मजबूत करता है। वे यह भी संकेत देंगे कि क्या भाजपा अपनी हैट्रिक के साथ और अधिक अहंकारी हो जायेगी? भाजपा की लगातार तीसरी जीत पार्टी को अपने हिंदुत्व कार्यक्रम को और अधिक जोश के साथ आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

'इंडिया' की बैठक के प्रयोजन और निहितार्थ

1 जून को लोकसभा चुनाव के सातवें एवं अंतिम चरण का मतदान जब तक समाप्त होगा, संयुक्त प्रतिपक्ष यानी इंडिया की दिल्ली में बैठक आहूत की गई है। यह बैठक एक ओर जीत के प्रति इंडिया के विश्वास की अभिव्यक्ति है वहीं वह सरकार बनाने की रणनीति का हिस्सा भी कही जा सकती है। चुनावी नतीजों को लेकर जैसे अनुमान लगाये जा रहे हैं, वे निश्चित रूप से विपक्षी गठबन्धन में उत्साह का संचार करने के लिये पर्याप्त हैं। तो भी बैठक बुलाया जाना इस बात का संकेत है कि इंडिया चौकन्ना है और वह ऐसी कोई भी गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहता जिससे जोड़–तोड़ में माहिर भारतीय जनता पार्टी सेंधमारी कर सके। बैठक को लेकर यह भी कयास लगाये जा रहे हैं कि बहुमत मिलने की स्थिति में प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार इसमें तय हो सकता है। चुनाव के परिणाम 4 जून को निकलेंगे। दोपहर तक ही तय हो जायेगा कि किसकी सरकार बनेगी। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी अपने बल पर 370 और अपने सहयोगियों (नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस– एनडीए) के साथ मिलकर 400 पार जाने का नारा दे रही है। हालांकि यह लक्ष्य 7 मई को हुए मतदान के तीसरे चरण के बाद ही हवा–हवाई हो चुका है। तो भी इसका जिक्र कभी–कभार भाजपा की प्रचार सभाओं में होता रहता है। यह अलग बात है कि अब भाजपा इतना ही कह रही है कि वह सरकार बनाने लायक सीटें (272) तो ले ही आयेगी, यानी मोदी तीसरी बार पीएम बनने जा रहे हैं। दूसरी तरफ जो ज़मीनी हालात दिखाई दे रहे हैं उससे इंडिया को बढ़त साफ महसूस की जा सकती है। अब तो केवल 8 राज्यों की मात्र 57 सीटों पर मतदान रह गया है लेकिन अब तक कांग्रेस व गठबन्धन के सहयोगी दलों की सभाओं में उमड़ी भीड़ ने बता दिया है कि जादुई आंकड़े को भाजपा नहीं इंडिया छूने जा रहा है। जिस उत्तर प्रदेश को भाजपा का सबसे मजबूत किला कहा जाता है, वहां भी उसे अपनी कई सीटें बचाने के लिये कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है। गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड जैसे राज्यों में जहां 2019 में भाजपा का स्ट्राइक रेट शत प्रतिशत या लगभग उतने का स्ट्राइक रेट था, वहां के बारे में पूरे दावे से कोई नहीं कह पा रहा है कि वह इस प्रदर्शन को दोहरा सकेगी। उल्टे, केरल, तमिलनाडु, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब जैसे राज्यों में इस प्रकार का प्रदर्शन इंडिया द्वारा होना सम्भव बतलाया जा रहा है। जिस हिन्दी पट्टी को लेकर भाजपा–एनडीए बहुत आश्वस्त थे, वहां हर राज्य में उनकी नाव डगमगा रही है। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, बिहार, तेलंगाना और कर्नाटक में भाजपा पिछले दोनों (2014 व 19) चुनावों के मुकाबले पिछड़ती दिख रही है। इस स्थिति में अनेक ऐसे तथ्य हैं जिन्हें लेकर इंडिया को बहुत सावधान रहने की आवश्यकता होगी। सम्भवतः प्रस्तावित बैठक का यह भी एक महत्वपूर्ण एजेंडा होगा; और यदि न हो तो उसे होना चाहिये। मुश्किल से 2 वर्ष पहले तक भाजपा के बारे में लोगों की यही राय थी कि उसे पराजित नहीं किया जा सकता और मोदी का कोई विकल्प नहीं है। राहुल गांधी की दो भारत जोड़ो यात्राओं, मल्लिकार्जुन खरगे का कुशल नेतृत्व, प्रियंका गांधी की मेहनत, शरद पवार, ममता बनर्जी, तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव, उद्धव ठाकरे, अरविंद केजरीवाल, एमके स्टालिन, कल्पना सोरेन आदि के जुझारूपन ने इंडिया को जीत की दहलीज तक लाया है। इसके बाद रह जाती है तो सतर्कता– ईवीएम को लेकर।

वोटरों में भरपूर उत्साह देखने को मिला

सपा प्रत्याशी काजल निषाद ने डाला वोट

गोरखपुर लोकसभा से इंडिया गठबंधन की सपा प्रत्याशी काजल निषाद ने भी अपने मत का प्रयोग किया। गोपलापुर के मतदान केंद्र में काजल ने मतदान किया।

भाजपा प्रत्याशी ने परिवार के साथ डाला वोट

कुशीनगर के भाजपा प्रत्याशी सांसद विजय कुमार दुबे अपनी पत्नी पूर्व ब्लॉक प्रमुख रंजना दुबे और पुत्र ब्लॉक प्रमुख शशांक दुबे के साथ अपने गांव में मतदान करने पहुंचे।

यूपी: गर्मी ने तोड़े कई रिकार्ड

48 डिग्री के ऊपर रहा चार शहरों का पारा, मौसम विभाग ने जारी की सख्त चेतावनी

लखनऊ-संवाददाता

यूपी में रिकॉर्ड तोड़ने वाली गर्मी पड़ी। झांसी का तापमान 49 डिग्री तक पहुंच गया। यूपी के चार शहर ऐसे रहे जहां पारा 48 के पार हो गया। चढ़ता हुआ पारा, भीषण लू के बीच अपने ही रिकार्ड को तोड़ते हुए मंगलवार को उत्तर प्रदेश मई में अब तक सबसे गर्म रहा। एक साथ गर्मी ने कई रिकॉर्ड तोड़े। झांसी में पारा 49 डिग्री पहुंच गया, आगरा में दिन का तापमान 48.6 डिग्री रहा और वाराणसी का पारा 47.6 डिग्री रहा। आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, इससे पहले ये तीनों ही शहर मई माह में इतने गर्म कभी नहीं रहे। झांसी तो गर्मी के मौसम में कभी भी इतना गर्म नहीं रहा। वहीं हमीरपुर में दिन के पारे ने मई 2005 की बराबरी की और यहां पर अधिकतम तापमान 48.2 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

झांसी	49
आगरा	48.6
हमीरपुर	48.2
प्रयागराज	48.2
कानपुर	47.6
वाराणसी	47.6
फतेहपुर	47.2
चुर्क	46.2
अलीगढ़	45.8
फुरसतगंज	45.2
इटावा	45

जारी है चेतावनी, कई इलाकों में रेड अलर्ट

मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद, इटावा, औरैया, जालौन, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर व आसपास के इलाकों में भीषण लू चलने की चेतावनी जारी की गई है।

जारी की चेतावनी

कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, सोनभद्र, मिर्जापुर, संत रविदास नगर, लखीमपुर खीरी, हरदोई, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी इटावा, औरैया, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, बदायूं, जालौन व आसपास के इलाके।

यहां हैं आरेंज अलर्ट

बांदा, चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, सोनभद्र, मिर्जापुर, संत रविदास नगर, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, अलीगढ़, हाथरस, एटा, मैनपुरी व आसपास भी लू को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।प्रतापगढ़, चंदौली, फर्रूखाबाद, उन्नाव, रायबरेली, मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, कासगंज व आसपास के इलाकों में भी लू चल सकती है।

इतने वर्षों के आंकड़ों के आधार पर की जा रही तुलना

मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, झांसी के 1892 से मौसम का रिकार्ड उपलब्ध है। वहीं आगरा के मौसम का रिकार्ड 1884 यानी 140 वर्षों का रिकार्ड है, जबकि वाराणसी का 1977 यानी 47 वर्षों का रिकार्ड उपलब्ध है। जिन तीनों शहरों में आज तापमान का रिकार्ड टूटा है, वहां इतने वर्षों में इतना गर्म कभी रहा ही नहीं।

इतनी गर्मी पड़ने का कारण क्या है

मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, ऊपरी क्षोभ मंडल में प्रति चक्रवात सक्रिय है। राजस्थान व पाकिस्तान तप रहे और वहां से गर्म हवा का असर प्रदेश को तपा रहा है। इसी तरह इस वक्त सूर्य धरती के सबसे करीब है, बादल हैं नहीं, इसके कारण सूर्य की किरणें सीधी पड़ रही हैं। अलनीनो प्रभाव गर्मी बढ़ा रहा है। इसी के कारण प्रति चक्रवात यानी एंटी साइक्लोन की स्थिति बनी हुई है।

राहत कब तक ?

मौसम वैज्ञानिक के मुताबिक, बुधवार को ऐसे ही हालात रहने के आसार हैं। बृहस्पतिवार से पुरवा हवा का प्रभाव बढ़ने से पछुआ हवा का असर कम होगा। बादलों की आवाजाही शुरू होगी। तराई वाले इलाकों, गोरखपुर, बस्ती, देवीपाटन आदि मंडलों के आसपास बारिश शुरू हो सकती है। इससे कुछ राहत मिलेगी। एक जून को प्रदेश से लू से मुक्ति मिलने के आसार हैं।

लंबी चलेगी दोस्ती या फिर होगी खटपट...

सपा-कांग्रेस लंबी दोस्ती के लिए बना रहे रणनीति, नतीजे तय करेंगे मियाद

लखनऊ। लंबी चलेगी दोस्ती या फिर होगी खटपट। सपा और कांग्रेस लंबी दोस्ती के लिए रणनीति बना रहे हैं। एक जून को दिल्ली में इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटकों की बैठक होगी। राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच एक सवाल अक्सर ही उठता है कि क्या सपा और कांग्रेस की दोस्ती लंबी चलेगी? या फिर पूर्व की तरह चुनाव होते ही गठबंधन बिखर जाएगा? इन सब चर्चाओं के बीच सपा और कांग्रेस लंबी दोस्ती के लिए रणनीति बना रहे हैं।

एक जून को दिल्ली में इंडिया के प्रमुख घटकों की बैठक होगी, जिसमें भविष्य की कार्ययोजना भी तैयार होगी। वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और सपा के बीच गठबंधन हुआ था। लेकिन, परिणाम आशा के अनुरूप नहीं आए। चुनाव होते ही यह गठबंधन तार-तार हो गया।

दोनों पार्टियों के नेताओं ने एक-दूसरे पर खूब तीर चलाए। इसी तरह वर्ष 2019 का लोकसभा चुनाव सपा और बसपा ने मिलकर लड़ा। इस चुनाव में सपा को कुछ अधिक हासिल नहीं हुआ।

पिछले लोकसभा चुनाव के तत्काल बाद दोनों पार्टियों के बीच शीत युद्ध प्रारंभ हो गया, जोकि इस समय चरम पर है। बसपा सुप्रीमो मायावती और सपा प्रमुख अखिलेश यादव दोनों एक-दूसरे पर शब्द-बाण चला रहे हैं। विगत इतिहास को देखते हुए यूपी में सपा और कांग्रेस के रिश्तों के भविष्य को लेकर सवाल उठना लाजिमी है।

नतीजे तय करेंगे मियाद

इन दिनों पूर्वांचल में मतदाताओं के बीच सर्वे कर रहे लखनऊ विवि के राजनीति शास्त्र के प्रो. संजय गुप्ता मानते हैं कि काफी हद तक गठबंधन चुनाव परिणामों पर निर्भर करता है। उनका कहना है कि इस बार के चुनाव में सपा-कांग्रेस गठबंधन बेहतर स्थिति में रहने की संभावना है। इसलिए यह गठबंधन लंबा चल सकता है। जेएनयू के पूर्व शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. अरशद आलम कहते हैं कि कांग्रेस और सपा का सामाजिक आधार (वोट बैंक) आपस में टकराता नहीं है। इसलिए इस गठबंधन की उम्र लंबी हो सकती है।

वहीं, भाजपा के प्रमुख नेता सार्वजनिक मंचों से बार-बार कह रहे हैं कि विपक्षी गठबंधन चुनाव बाद तार-तार होकर बिखर जाएगा। उधर, इंडिया गठबंधन के सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस चाहती है कि जिन दलों के साथ चुनाव मिलकर लड़ा है, उनके साथ अच्छे रिश्ते भविष्य में भी कायम रहें।

इसलिए एक जून को दिल्ली में होने वाली बैठक में सरकार बनाने की संभावनाओं के साथ-साथ आपसी रिश्तों को मजबूत करने पर भी बात होगी। ताकि, भाजपा के खिलाफ लंबी लड़ाई के लिए खुद को तैयार कर सकें।

चुनाव के दौरान भड़काऊ भाषण देने पर 42 मुकदमे दर्ज, आचार संहिता उल्लंघन पर अब तक 153 मुकदमे

लखनऊ,संवाददाता। यूपी पुलिस ने चुनाव आदर्श संहिता के तहत भड़काऊ भाषण देने के मामले में अब तक 42 मुकदमे दर्ज कर लिए हैं। सपा नेता एवं पूर्व मंत्री आजम खां को 2019 लोकसभा चुनाव में हेट स्पीच देने पर सजा हो चुकी है। लोकसभा चुनाव के दौरान नेताओं की जुबानी जंग अब मुसीबत का सबब बन सकती है। प्रदेश पुलिस ने चुनाव की आदर्श आचार संहिता के तहत भड़काऊ भाषण (हेट स्पीच) के 42 मुकदमे दर्ज किए हैं। जिसमें से सर्वाधिक 6 मुकदमे गोण्डा जिले में दर्ज हुए हैं।

बता दें कि इसके अलावा फतेहपुर में 3, कानपुर, प्रयागराज, सीतापुर, मुरादाबाद, चित्रकूट, औरैया, बाराबंकी में 2-2 और गाजियाबाद, वाराणसी, मुजफ्फरनगर, शामली, कानपुर देहात, मेरठ, संभल, बलिया, फतेहगढ़, मैनपुरी, फिरोजाबाद, चंदौली, कुशीनगर, बदायूं, इटावा, एटा, बलरामपुर, श्रावस्ती, जौनपुर और आजमगढ़ में एक-एक मुकदमा हेट स्पीच की शिकायत पर दर्ज हुआ है।

इन मुकदमों की जद में बसपा के पूर्व नेशनल कोआर्डिनेटर आकाश आनंद, बसपा के सीतापुर जिलाध्यक्ष विकास राजवंशी, बसपा प्रत्याशी महेंद्र यादव, लखीमपुर से बसपा प्रत्याशी अंशय कालरा, धौरहरा के बसपा प्रत्याशी श्याम किशोर अवस्थी, कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद, उनकी भतीजी मारिया आलम, संभल के सपा जिला उपाध्यक्ष मोहम्मद उस्मान, संभल के सपा प्रत्याशी जियाउर्रहमान बर्क, मुरादाबाद से सपा प्रत्याशी रुचि वीरा, कैराना से बसपा प्रत्याशी श्रीपाल राणा आदि शामिल हैं। वहीं बिना अनुमति प्रचार करने के मामले में गोंडा से भाजपा प्रत्याशी कीर्तिवर्धन सिंह, सपा प्रत्याशी श्रेया वर्मा, भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह, उनके बेटे एवं कैसरगंज से भाजपा प्रत्याशी करण भूषण सिंह पर मुकदमा दर्ज हो चुका है।

आजम को हुई सजा, अब्बास और उमर फंसे

बता दें कि सपा नेता एवं पूर्व मंत्री आजम खां को 2019 लोकसभा चुनाव में हेट स्पीच देने पर सजा हो चुकी है। हालांकि एमपी-एमएलए कोर्ट ने कुछ दिन पहले उन्हें बरी भी कर दिया है।

वहीं 2022 के विधानसभा चुनाव में हेट स्पीच देने पर सुभासपा प्रत्याशी अब्बास अंसारी और उनके भाई उमर अंसारी पर मुकदमा हुआ था, जिसकी सुनवाई चल रही है।

सुरजेवाला पर लगी रोक

चुनाव आयोग ने मथुरा से भाजपा प्रत्याशी हेमा मालिनी पर अमर्यादित टिप्पणी करने पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रणदीप सुरजेवाला के चुनाव प्रचार पर 48 घंटे की रोक लगा दी थी। साथ ही उनसे जवाब-तलब भी किया था।

अब तक 153 मुकदमे दर्ज

चुनाव आयोग के मुताबिक लोकसभा चुनाव के दौरान प्रदेश में अब तक बिना अनुमति के सभा व भाषण करने, मतदाताओं को लुभाने के लिए नकदी बांटने, वाहनों में बीकन लाइट, फ्लैग के दुरुपयोग एवं अन्य मामलों में 153 मुकदमे दर्ज हो चुके हैं। इसके अलावा 9 एनसीआर भी दर्ज की गयी हैं।

चुनाव में दस-बीस करोड़ नहीं बल्कि 500 करोड़ रुपये के पार हुई जब्ती

उत्तर प्रदेश में प्रलोभनों की जब्ती का आंकड़ा तेजी से बढ़ा है। छठे चरण के चुनाव की समाप्ति तक प्रदेश में 503 करोड़ रुपये कीमत की शराब ड्रग बहुमूल्य धातुएं व नकदी पकड़ी गई है। पांचवें चरण की चुनाव की समाप्ति तक यह आंकड़ा 429 करोड़ था। वर्ष 2019 के चुनाव के दौरान प्रदेश भर में 195.19 करोड़ रुपये की नकदी व अन्य वस्तुएं पकड़ी गईं थी।

500 करोड़ के पार पहुंची प्रलोभनों की जब्ती

राज्य ब्यूरो, लखनऊ। उत्तर प्रदेश में प्रलोभनों की जब्ती का आंकड़ा तेजी से बढ़ा है। छठे चरण के चुनाव की समाप्ति तक प्रदेश में 503 करोड़ रुपये कीमत की शराब, ड्रग, बहुमूल्य धातुएं व नकदी पकड़ी गई है। पांचवें चरण की चुनाव की समाप्ति तक यह आंकड़ा 429 करोड़ था। वर्ष 2019 के चुनाव के दौरान प्रदेश भर में 195.19 करोड़ रुपये की नकदी व अन्य वस्तुएं पकड़ी गईं थी। जाहिर है छठे चरण के चुनाव तक ही जब्ती का आंकड़ा पिछले चुनाव के ढाई गुणे से अधिक पहुंच चुका है।

शराब, ड्रग, बहुमूल्य धातुएं व नकदी जब्त

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि आबकारी, आयकर, पुलिस एवं नारकोटिक्स एवं अन्य प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा एक मार्च से 26 मई तक कुल 503.79 करोड़ रुपये कीमत की शराब, ड्रग, बहुमूल्य धातुएं व नकदी आदि जब्त की गई हैं। इसमें 91.38 करोड़ रुपये नकद धनराशि, 56.18 करोड़ कीमत की शराब, 240.16 करोड़ कीमत की ड्रग, 28.30 करोड़ की बहुमूल्य धातुएं, 59.48 करोड़ के उपहार एवं 28.16 करोड़ रुपये कीमत की अन्य सामग्री शामिल है। वहीं, 26 मई को एक दिन में कुल 2.93 करोड़ रुपये की कीमत की शराब, ड्रग व नगदी आदि जब्त की गई। वाराणसी कैंट में ही 1.63 करोड़ रुपये की अनुमानित कीमत की बहुमूल्य धातुएं पकड़ी गई हैं।

मद	वर्ष 2019	26 मई 2024 तक	
नकद	48.64	91.38	
शराब	46.08	56.18	
ड्रग	28.68	240.16	
बहुमूल्य धातुएं		71.79	28.30
अन्य	00	87.75	
कुल	195.19	503.79।	

आग की भट्ठी बनी यूपी

भीषण लू का अलर्ट, प्रचंड गर्मी से अब तक सात लोगों की मौत

यूपी में प्रचंड गर्मी से अब तक सात लोगों की मौत
इटावा में हीटवेव ने ले ली चार की जान
अगले 48 घंटों में भीषण लू का अलर्ट

संवाददाता, लखनऊ। प्रदेश में लोगों का प्रचंड गर्मी से बुरा हाल रहा। वहीं कई जिलों का तापमान 45 के पार रहा। तेज धूप और लू के ने लोगों का हाल बेहाल कर दिया। वहीं अगर बात करें कानपुर की तो कानपुर के हर क्षेत्र में गर्मी के रौद्र रूप ने कईयों को अस्पताल पहुंचा दिया। मंगलवार को प्रचंड गर्मी के चलते चार की मौत हो गई। दो–तीन और गर्मी को लेकर प्रशासन की ओर से बचाव की एडवाइजरी जारी कर दी गई है। वहीं आगरा, अलीगढ़, औरैया, इटावा, फ़िरोज़ाबाद, गौतमबुद्धनगर, गाज़ियाबाद, हमीरपुर, हाथरस, जालौन, झांसी, ललितपुर, महोबा एवं मथुरा में आगामी 24–48 घंटों के दौरान कुछ पॉकेट में लू से भीषण लू चलने की सम्भावना है।

आगरा में टूटा 50 वर्ष का रिकार्ड

आगरा में मई में गर्मी का 50 वर्ष का रिकॉर्ड टूटा। वर्ष 1974 से 2024 तक मई में मंगलवार सबसे गरम रहा। मंगलवार को आगरा में अधिकतम तापमान 48.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। यह सोमवार को रहे अधिकतम तापमान 47.8 डिग्री सेल्सियस से अधिक था। इससे पहले 31 मई, 1994 को आगरा में अधिकतम तापमान 48.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया था। 49 डिग्री सेल्सियस के साथ मंगलवार को प्रदेश में झांसी सबसे गरम रहा।

गर्मी से आंध्र प्रदेश की तीर्थ यात्री की मौत, दो की हालत बिगड़ी

आंध्र प्रदेश से बनारस, अयोध्या के बाद आगरा भ्रमण पर आई यात्रियों से भरी बस में सवार महिला की मंगलवार दोपहर गर्मी के कारण फिरोजाबाद में मौत हो गई। वहीं दो यात्रियों की हालत खराब है। उन्हें ट्रामा सेंटर में भर्ती किया गया है। टूंडला क्षेत्र के हजरतपुर फैक्ट्री के पास खाना खाने के लिए यात्री रुके थे। मुंह धोते समय महिला लुक्का रेणुकाम्मे निवासी मुलाकुड्डारू गुंटूर, आंध्र प्रदेश पर गिर गई। कुछ देर में ही उनकी मृत्यु हो गई।

पांच साल बाद 48 डिग्री के पार पहुंचा प्रयागराज का पारा

मंगलवार को प्रयागराज सीजन का सबसे गर्म दिन रहा। अधिकतम तापमान 48.2 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। यह पिछले पांच वर्षों के दौरान मई का सर्वाधिक तापमान है। इससे पहले 30 मई 2019 को जिले का अधिकतम तापमान 48.6 डिग्री रिकॉर्ड किया गया था, जो कि मई महीने का अब तक का सबसे गर्म दिन रिकॉर्ड में दर्ज है। इसके अलावा 18 मई 2013 को 48.3 डिग्री सेल्सियस और 30 मई 1994 को तापमान 48.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। भीषण गर्मी की वजह से लोगों का हाल बेहाल हो गया। सड़क पर एक चंद मिनट खड़ा रहना भी मुश्किल हो गया। गर्म हवाओं ने तापमान को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाई। बुधवार को तापमान एक नया रिकार्ड बना सकता है।

भीषण गर्मी से अधेड़ ने तोड़ा दम

नवाबगंज कोतवाली क्षेत्र के परियावां निवासी मोहनलाल 55 वर्ष पुत्र दुर्गा दीन अपने बेटी संगीता निवासी बहेरिया चौदह मिल कर दो दिन पहले ही घर आया था। बेटी संगीता ने बताया कि गर्मी की वजह से बीपी हाई हो जाने के कारण पिता बेहोश हो गये, जिनको एंबुलेंस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डलमऊ पहुंचाया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

इटावा में चार की मौत

महोबा में मंगलवार को जनमानस को प्रचंड गर्मी का सामना करना पड़ा, अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस रहा जबकि न्यूनतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस रहा। सुबह से ही तपिश महसूस हो रही थी। इस वजह से कहीं पर भी चैन नहीं मिल रहा था। प्रचंड गर्मी के कारण जिले में मंगलवार को चार लोगों की मौत हो गई।

हमीरपुर में प्रचंड गर्मी से मजदूर की मौत

थाना क्षेत्र सिसोलर के ग्राम टोलामाफ निवासी 58 वर्षीय रामचरण सोमवार को सुबह मनरेगा के तहत खेत में मजदूरों के साथ काम करने गए थे। दोपहर छुट्टी होने पर अचानक उसकी तबीयत बिगड़ने पर वह खेत में ही लेट गए और बाद में हालत बिगड़ते देख मजदूरों की मदद से उसे उसके घर पहुंचा दिया गया। जहां शाम को उनकी मौत हो गई। घटना से मृतक के स्वजन में कोहराम मच गया। स्वजन ने बताया कि तेज धूप के कारण रामचरण की मौत हुई है। वहीं मौसम विभाग के प्रेक्षक भवानीदीन ने बताया कि मंगलवार को दिन का अधिकतम तापमान 48.2 तक पहुंच गया।

ओवरलोडिंग के साथ ट्रांसफार्मर फुंक हो रहे हैं। इसके अलावा बिजली लाइनों में फाल्ट भी बढ़ रहे हैं। गर्मी में बार–बार बिजली जाने से उपभोक्ता परेशान हैं। उपकेंद्रों पर ट्रांसफार्मरों को ठंडा करने के लिए कूलर लगाने के साथ ही सबमर्सिबल पंप से पानी डाला जा रहा है।

भीषण गर्मी में बांदा का अधिकतम तापमान 49 व न्यूनतम 33 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। नौतपा के पहले दिन अधिकतम तापमान 42 व न्यूनतम 32 डिग्री सेल्सियस था। चौथे दिन अब सात डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया। अभी नौतपा के पांच दिन शेष हैं।

मौसम विभाग के मुताबिक अभी तापमान बढ़ सकता है। गर्मी से बचने के लिए घरों में दुबके लोगों का भी जीना मुहाल है। त्वचा झुलसाने वाली गर्मी अब लोगों के लिए आफत बन गई है। दोपहर को सड़कों गलियों में सन्नाटा पसरा रहता है। सुबह शाम को भी निकले लोग पूरी तरह से शरीर को ढके रहते हैं।

सबसे गर्म दिन रहा मंगलवार

मई माह के अंतिम चौथे सप्ताह में मंगलवार को प्रचंड गर्मी का एहसास हुआ। सुबह से तेज धूप निकली तो तपिश बढ़ती चली गई। दोपहर 12 बजे से हाईवे में चलने वाले लंबी दूरी के ट्रक के पहिए थमने शुरू हो गए। ड्राइवरों ने हाईवे के किनारे खुले ढाबों में गर्मी से बचाव करते हुए वाहन खड़े कर दिए। जिला मुख्यालय में दोपहर के समय सन्नाटा चीरने लगा। घुमंतू मवेशी भी पेड़ों की छांव के नीचे हाफते हुए नजर आए। खरीदारों की कमी के चलते बाजारों में सन्नाटा दिखाई दिया। गर्मी के चलते सेहत पर बुरा असर भी पड़ रहा है। चिकित्सकों के चेंबर के सामने मौसम से प्रभावित मरीजों की लंबी लाइनें लग रहीं हैं। इटावा में मंगलवार को दिन में तेज धूप के चलते लोग गर्मी से बेहाल हो गए। हवा का बहाव 29.9 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से रहा। अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। सुबह से शाम तक गर्म हवाओं के कारण जनजीवन अस्त–व्यस्त रहा। दोपहर में सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहा। लोग घरों से बाहर नहीं निकले। आंख के मरीजों की संख्या बढ़ी है।

भीषण गर्मी को लेकर प्रशासन ने जारी किया अलर्ट

तापमान में लगातार बढ़ोत्तरी को देखते हुए प्रशासन ने अलर्ट जारी किया है। मंडलायुक्त डा रोशन जैकब ने विभागों को गमह्न और लू से बचाव के इंतजाम करने को कहा है। अस्पतालों में हीट स्ट्रोक के मरीजों के लिए अलग कमरे आरक्षित के साथ ही डाक्टरों की चौबीस घंटे मौजूदगी के निर्देश दिए हैं। अस्पतालों में जरूरी दवाओं और एंबुलेंस में वह सभी चीजें उपलब्ध हों जिससे गमह्न से अचानक बीमार होने वाले मरीजों को राहत पहुंचा जा सके। अस्पतालों के अलावा बाजारों, सार्वजनिक स्थानों और बस अड्डों पर शीतल पेयजल और कूलर व पंखे सहित सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश दिए हैं।

पशुओं के पानी की व्यवस्था करें

मंडलायुक्त ने सभी नगर पंचायतों और ग्राम पंचायतों को भी निर्देश दिए हैं कि पशुओं के पीने के पानी की भी व्यवस्था प्राथमिकता पर की जाए। जिन तालाबों में पानी नहीं है वहां पर तत्काल इसकी व्यवस्था कराई जाए। इसके अलावा जगह जगह पर प्याऊ के इंतजाम हों ताकि लोगों को बीमार होने से बचाया जा सके। साथ ही प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि बेहद जरूरी कार्य पर ही दोपहर को घर से निकलें।

मतदान में महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ा

14 में 13 सीटों पर अधिक रहा वोट प्रतिशत

प्रदेश की 14 लोकसभा सीटों के लिए बीते हुए चुनाव में सबसे कम 54.04 प्रतिशत वोट पड़े। यहां 51.31 प्रतिशत पुरुषों और 57.12 प्रतिशत महिलाओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। महिलाओं और पुरुषों के वोटिंग प्रतिशत में 5.81 प्रतिशत का फासला देखा गया। पांचवें चरण में भी महिलाओं का वोट प्रतिशत पुरुषों से बेहतर रहा था।

राज्य ब्यूरो, लखनऊ। उत्तर प्रदेश में छठे चरण की 14 लोकसभा सीटों पर हुए चुनाव में कम मतदान की एक वजह पुरुषों न्यूनतम भागीदारी रही है। मंगलवार को चुनाव आयोग के स्तर से जारी मतदान प्रतिशत के अंतिम आंकड़ों में यह वजह स्पष्ट दिखाई दे रही है।

प्रदेश की 14 लोकसभा सीटों के लिए बीते 26 मई को हुए चुनाव में सबसे कम 54.04 प्रतिशत वोट पड़े। यहां 51.31 प्रतिशत पुरुषों और 57.12 प्रतिशत महिलाओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। महिलाओं और पुरुषों के वोटिंग प्रतिशत में 5.81 प्रतिशत का फासला देखा गया। पांचवें चरण में भी महिलाओं का वोट प्रतिशत पुरुषों से बेहतर रहा था। डुमरियागंज व लालगंज सीट पर महिलाओं और पुरुषों के वोट प्रतिशत के बीच करीब 10 प्रतिशत तक का फासला देखा गया। वहीं, संत कबीर नगर और आजमगढ़ में भी दोनों के वोटिंग प्रतिशत में बड़ा अंतर दिखा। इसके अलावा इलाहाबाद, अंबेडकर नगर, बस्ती, भदोही, जौनपुर, मछलीशहर, प्रतापगढ़, श्रावस्ती व सीतापुर में भी महिला वोटर पुरुषों पर भारी पड़ी। छठे चरण में सिर्फ फूलपुर ही एकमात्र सीट रही जहां पुरुषों का वोटिंग प्रतिशत महिलाओं से बेहतर रहा।

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के लिए घोषित किए गए उम्मीदवारों में से सिर्फ 21 पर ही 150 करोड़ रुपये का कर्ज है। सबसे बड़े कर्जदार कैसरगंज से भाजपा प्रत्याशी करण भूषण सिंह हैं। लोकसभा चुनाव में खड़े यूपी के उम्मीदवारों में से 351 के ऊपर भारी कर्ज है। सबसे बड़े कर्जदार कैसरगंज के भाजपा प्रत्याशी करण भूषण सिंह हैं। उन पर 22.93 करोड़ रुपये का कर्जा है। वहीं कानपुर से कांग्रेस प्रत्याशी आलोक मिश्रा प्रदेश में दूसरे सबसे बड़े कर्जदार हैं। उन पर 12.83 करोड़ रुपये का बोझ है। पिछले लोकसभा चुनाव में 377 प्रत्याशियों पर 388 करोड़ रुपये का कर्ज था।

इस बार चुनावी मैदान में ताल ठोंक रहे उम्मीदवारों में बड़ी संख्या में ऐसे हैं, जिनके ऊपर काफी कर्ज हैं। प्रत्येक चरण में सबसे ज्यादा देनदारी वाले शीर्ष तीन प्रत्याशियों की एडीआर द्वारा रिपोर्ट जारी की गई। सभी सातों चरण में सबसे ज्यादा देनदारी वाले शीर्ष 21 प्रत्याशियों में से भाजपा के नौ, सपा के पांच, बसपा के तीन, कांग्रेस के दो और इंडियन नेशनल लोकदल व फॉरवर्ड ब्लॉक का एक–एक उम्मीदवार है।

बसपा के लिए आसान नहीं 7वें चरण का चक्रव्यूह भेद पाना...

पिछले चुनाव में इन दो सीटों पर 'हाथी' पड़ा था भारी

लखनऊ,संवाददाता। लोकसभा चुनाव के सातवें चरण का चक्रव्यूह इस बार काफी पेचीदा हो गया है। बहुजन समाज पार्टी ने पिछले चुनाव में इन दो सीटों पर बाजी मारी थी। लेकिन इस बार हाथी की राह आसान नहीं है। बहुजन समाज पार्टी के लिए सातवें चरण का चक्रव्यूह इस बार काफी पेचीदा है। पिछले चुनाव में घोसी और गाजीपुर में हाथी सब पर भारी पड़ा था। हालांकि पार्टी ने प्रत्याशियों के चयन में काफी सावधानियां बरती हैं, फिर भी बदले समीकरणों में पिछले प्रदर्शन को दोहरा पाना आसान नहीं है।

पिछला लोकसभा चुनाव सपा और बसपा ने मिलकर लड़ा था। बसपा ने पांच सीटों पर, जबकि सपा ने आठ पर अपने प्रत्याशी उतारे थे। गाजीपुर में 51.2 फीसदी और घोसी में 50.3 फीसदी वोट शेयर के साथ उसे जीत मिली थी। जबकि देवरिया में 32.57 फीसदी, बांसगांव में 40.57 फीसदी और सलेमपुर में 38.52 फीसदी वोट शेयर के साथ हाथी दूसरे स्थान पर था। ये आंकड़े बताते हैं कि गठबंधन का बसपा को फायदा मिला था। गाजीपुर सांसद अफजाल अंसारी इस बार सपा से चुनाव मैदान में हैं, जबकि घोसी के सांसद अतुल कुमार सिंह को बसपा सुप्रीमो पार्टी से बाहर कर चुकी हैं। पार्टी ने इस बार सभी 13 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। गाजीपुर से डॉ. उमेश कुमार सिंह और घोसी से पूर्व सांसद बालकृष्ण चौहान पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने भरोसा जताया है।

पर...सोशल इंजीनियरिंग का रंग तो दिखेगा ही

बसपा ने प्रत्याशियों के चयन में सोशल इंजीनियरिंग का बखूबी इस्तेमाल किया है। हाथी भले ही कमाल न दिखा पाए, लेकिन सोशल इंजीनियरिंग के बूते प्रतिद्वंद्वियों की मुश्किलें जरूर बढ़ाएगा। पार्टी ने वाराणसी में अतहर जमाल लारी को प्रत्याशी बनाया है, जो मुस्लिम वोटबैंक को सपा–कांग्रेस गठबंधन की तरफ जाने से रोकने में जुटे हैं।

इसी तरह महराजगंज और गोरखपुर में भी मुस्लिमों को टिकट दिया गया है। यही नहीं, देवरिया और बलिया सीट पर यादव प्रत्याशी उतारे हैं। पिछले चुनाव में बसपा ने देवरिया में विनोद कुमार जायसवाल को टिकट दिया था, जिन्हें भाजपा के रमापति राम त्रिपाठी ने करीब ढाई लाख वोटों से हराया था। इस बार शशांक मणि त्रिपाठी भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं।

सलेमपुर में रोचक होगी लड़ाई

बसपा ने सलेमपुर में अपने पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भीम राजभर को टिकट दिया है। पिछले चुनाव में सलेमपुर से रविंदर बसपा के प्रत्याशी थे, जिन्हें भाजपा के राजेश कुमार मिश्रा ने करीब 1.13 लाख वोटों से शिकस्त दी थी। भीम राजभर भाजपा की चुनौतियां बढ़ाते दिख रहे हैं।

वहीं, बांसगांव सुरक्षित सीट से सदल प्रसाद की जगह डॉ. राम समुझ को मौका दिया गया है। सदल प्रसाद कांग्रेस के टिकट पर मैदान में हैं, जबकि भाजपा ने अपने तीन बार के सांसद कमलेश पासवान को फिर से मैदान में उतारा है। यहां भी भाजपा की चुनौतियां बढ़ेंगी।

वाराणसी। यहां अवधेश राय और कृष्णानंद राय के नाम पर आठ लाख भूमिहार वोटों पर निशाना है। यूपी की इन सीटों पर राय बिरादरी के वोटर सियासी खेल बनाते–बिगाड़ते हैं। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के बड़े भाई अवधेश राय की हत्या के मामले में सजायाफ्ता माफिया मुख्तार अंसारी की मौत के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को पहली बार सार्वजनिक मंच से बयान दिया। कपसेठी क्षेत्र के लखनसेनपुर गांव स्थित सर्वोदय इंटर कॉलेज के मैदान में मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा अवधेश राय को श्रद्धांजलि दे रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अवधेश राय की हत्या माफिया ने की थी। मगर, उनके भाई और कांग्रेस प्रत्याशी ने माफिया के सामने घुटने टेकने का काम किया था। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने लखनसेनपुर और गाजीपुर में भाजपा के पूर्व विधायक कृष्णानंद राय को श्रद्धांजलि दी। सियासी जानकारों का कहना है कि मुख्यमंत्री ने अवधेश राय और कृष्णानंद राय के नाम के बहाने पूर्वांचल के सातवें चरण के पांच लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के आठ लाख से ज्यादा भूमिहार मतदाताओं को साधने का काम किया है। कारण कि, भूमिहार बिरादरी के दोनों ही चर्चित चेहरों की हत्या के पीछे माफिया मुख्तार अंसारी का नाम ही हमेशा सामने रहा है।

काशी से रघुनाथ सिंह, सत्यनारायण सिंह और लोकबंधु राजनारायण जैसे भूमिहार नेताओं का नाता रहा है। यह जरूर है कि राम जन्मभूमि आंदोलन के बाद वाराणसी से भूमिहार बिरादरी का कोई नेता संसद नहीं पहुंच सका। 90 के दशक के बाद काशी से सटे लहुरी काशी कहलाने वाले गाजीपुर से भूमिहार बिरादरी के मनोज सिन्हा तीन बार संसद पहुंचे।

मऊ जिले की घोसी लोकसभा से वर्ष 1989 से कल्पनाथ राय को लगातार चार बार संसद पहुंचने का अवसर मिला। उनके बाद वर्ष 2019 के आम चुनाव में भूमिहार बिरादरी के अतुल राय ने घोसी से दिल्ली तक का रास्ता तय किया। इसके अलावा बलिया लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से भूमिहार बिरादरी के प्रत्याशी संसद तक तो नहीं पहुंचे, लेकिन वह चुनाव का गणित बनाने और बिगाड़ने की भूमिका में रहते हैं। इसी तरह से चंदौली में भूमिहार बिरादरी निर्णायक भूमिका में तो नहीं है, लेकिन इतनी संख्या जरूर है कि वह किसी भी प्रत्याशी को सियासी संजीवनी दे सकते हैं।

पांच सीटों पर भूमिहार बिरादरी के मतदाताओं का गुणा–गणित

जातिगत मतगणना न होने की वजह से किसी भी जाति के मतदाताओं की निश्चित संख्या बता पाना संभव नहीं है। मगर, मतदाताओं की जाति आधारित संख्या को लेकर प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं के अपने–अपने दावे हैं। अलग–अलग दावों के निचोड़ के अनुसार पूर्वांचल में बलिया में तकरीबन तीन लाख भूमिहार मतदाता हैं। मऊ जिले की घोसी लोकसभा में भूमिहार मतदाताओं की संख्या डेढ़ लाख बताई जाती है। वाराणसी में डेढ़ लाख तो गाजीपुर में एक लाख से ज्यादा भूमिहार बिरादरी के मतदाताओं के होने का दावा किया जाता है। वहीं, चंदौली लोकसभा क्षेत्र में भूमिहार बिरादरों के मतदाताओं की संख्या 50 से 60 हजार होने की बात राजनीतिक दलों के द्वारा कही जाती है।

ससुर के बोए कांटे बहू की राह में बन रहे शूल...

सपा ने यहां भाजपा के पूर्व सांसद पर खेला दांव; मुकाबला रोचक

रॉबर्ट्सगंज। यूपी की इस सीट पर ससुर के बोए कांटे बहू की राह में शूल बन रहे हैं। सपा ने यहां भाजपा के पूर्व सांसद को उतारकर बड़ा दांव खेला है। बसपा ने भी सबसे अधिक मुश्किलें रिंकी कोल के लिए पैदा की हैं। पिछले दो चुनावों में रॉबर्ट्सगंज (सुरक्षित) सीट पर आसानी से जीत दर्ज करने वाले राजग की प्रत्याशी रिंकी कोल (अपना दल–एस) को इस बार कड़े मुकाबले का सामना करना पड़ा रहा है। इसके पीछे दो प्रमुख वजहें हैं। एक तो यह कि मिर्जापुर की तर्ज पर सपा ने इस सीट पर भी भाजपा के पूर्व सांसद छोटेलाल खरवार जैसे कद्दावर प्रत्याशी को उतारकर कड़ी चुनौती पेश की है।

छोटेलाल ने 2014 में इसी सीट से भगवा परचम फहराया था। दूसरी चुनौती रिंकी के ससुर और अपना दल (एस) के मौजूदा सांसद पकौड़ी लाल के उन बयानों से मिल रही है, जो उन्होंने पिछले दिनों सवर्णों के खिलाफ दिए थे। यानी ससुर के बोए कांटे बहू की राह में शूल बनते दिख रहे हैं। बसपा ने भी धनेश्वर गौतम को मैदान उतारकर सबसे अधिक मुश्किलें रिंकी कोल के लिए पैदा की हैं।

बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और झारखंड की सीमा से सटे सोनभद्र जिले को बालू और पत्थरों की खदानों और अन्य खनिज भंडारों के चलते सोनांचल कहा जाता है। वहीं, पावर हब होने के कारण इस जिले को देश की ऊर्जा राजधानी भी कहते हैं। इसके बावजूद हर चुनाव में बड़ा मुद्दा जिले का विकास ही रहता है। विस्थापन, पुनर्वास, पलायन, रोजगार और पिछड़ेपन को लेकर भी खूब सवाल उठते हैं। पर, चुनावी रथ आगे बढ़ते ही इन सबकी गूंज मंद पड़ चुकी है। कड़वा सच तो यह है कि जब चुनाव जातीय समीकरणों पर हो रहे हों, तो मुद्दे गौण हो जाते हैं।

स्थानीय बनाम बाहरी का भी मुद्दा उछला

रॉबर्ट्सगंज सीट 2019 से राजग में शामिल अपना दल (एस) के खाते में है। चुनाव अंतिम दौर में पहुंचते–पहुंचते मुख्य मुकाबला अपना दल (एस) और सपा के बीच सिमट गया है। बहरहाल छोटेलाल खरवार के मैदान में उतरने से इस बार स्थानीय बनाम बाहरी प्रत्याशी का मुद्दा भी उछाला जा रहा है। रॉबर्ट्सगंज सदर विधानसभा क्षेत्र के नई बाजार के रहने वाले राम सजीवन सुशवाहा कहते हैं, रिंकी कोल से मिलने के लिए मिर्जापुर जाना होगा, जबकि छोटे लाल स्थानीय हैं। वहीं, जीऊत खरवार छोटेलाल को सजातीय होने के साथ ही जनता के बीच रहने वाला नेता बताते हैं।

सांसद के व्यवहार को लेकर भी सवाल

अमर उजाला की टीम पन्नूगंज बाजार पहुंची तो यहां चाय की दुकान पर चुनावी चर्चा चल रही थी। टीम भी उसमें शामिल हो गई। सांसद की ही बिरादरी के भुलेटन कोल कहते हैं, पांच साल हो गए लेकिन आज तक उनको (सांसद) नहीं देखा। बात को बढ़ाते हुए राम दुलारे मौर्य कहते हैं, हमारे गांव तो वे सिर्फ वोट मांगने आए थे, इसके बाद उनके दर्शन नहीं हुए। गांव की सड़क के लिए कई बार उनसे मिलने गए, लेकिन मुलाकात नहीं हुई।

सवर्णों के खिलाफ बयान भी बिगाड़ रहा खेल

सवर्णों के बारे में रिंकी कोल के ससुर की आपत्तिजनक टिप्पणी वाले ऑडियो को भी विपक्ष हमले के लिए हथियार बना रहा है। घोरावल बाजार में मिले प्रभु दयाल चुनावी माहौल के सवाल पर पकौड़ी लाल कोल का ऑडियो सुनाने लगते हैं। वह कहते हैं, अब यह सब सुनने के बाद भी हम कैसे सांसद के परिवार के बारे में सोचें। पास में बैठे चतुरी तिवारी भी प्रभु दयाल की बातों का समर्थन करते हैं।

बेरोजगारी युवाओं में बड़ा सवाल

युवाओं की बात करें तो उनके बीच बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है। बीटेक करने वाले अनिरुद्ध प्रसाद कहते हैं कि हमने दो बार प्रतियोगी परीक्षाओं में हिस्सा लिया, लेकिन दोनों बार पेपर लीक होने से सारा प्रयास बेकार हो गया। ओबरा के रहने वाले विवेक गुप्ता कहते हैं, अभावग्रस्त इलाके में रहने के बावजूद किसी तरह हमने एमए तो कर लिया, पर रोजगार के लिए दर– दर की ठोकरें खा रहा हूं। ऐसे ही कई युवा बेरोजगारी के मुद्दे पर सरकार के खिलाफ नाराजगी जताते हुए दिखे।

पांचों विधानसभा सीटों पर है राजग का कब्जा

रॉबर्ट्सगंज लोकसभा क्षेत्र में कुल पांच विधानसभा सीटें हैं। इनमें से चार–रॉबर्ट्सगंज, घोरावल, दुद्धी और ओबरा सोनभद्र जिले की हैं। वहीं, चकिया विधानसभा क्षेत्र चंदौली जिले का हिस्सा है। इन सभी सीटों पर भाजपा का ही कब्जा है। इसलिए अपना दल (एस) प्रत्याशी को थोड़ी मजबूती मिलने की उम्मीद जताई जा रही है। हालांकि सपा प्रत्याशी छोटेलाल चकिया विधानसभा क्षेत्र के ही रहने वाले हैं और यहां उनकी बिरादरी की बहुलता है

2.50 लाख दलित भी प्रभावित कर रहे समीकरण

इस सीट पर दलित मतदाताओं की संख्या करीब 2.50 लाख है, जिसे बसपा का कोर वोटबैंक माना जाता है। इनके बूते ही बसपा ने 2004 में जीत हासिल की थी। बसपा को भरोसा है कि यदि अन्य दलित वोटों में सेंध लगा ली जाए, तो चुनाव परिणाम बदला जा सकता है। हालांकि दलित मतदाताओं पर नजर गड़ाए दोनों प्रतिद्वंद्वी बसपा प्रत्याशी के मिर्जापुर का निवासी होने का मुद्दा उठाकर लाभ उठाने की कोशिश में जुटे हैं।

मोदी–योगी पर भरोसा बनेगा बड़ा संबल

मोदी–योगी पर कायम जनता के भरोसे को अपना दल (एस) की प्रत्याशी के लिए बड़ा संबल माना जा रहा है। खासकर आदिवासी बहुल क्षेत्रों में। इन क्षेत्रों में मुफ्त राशन, उज्ज्वला, आयुष्मान जैसी योजनाओं के लाभार्थियों में सवालों से ज्यादा योजनाओं की ही चर्चा देखने को मिली।

2019 का परिणाम

पकौड़ी लाल कोल, अपना दल–एस 4,47,914
भाईलाल काल, सपा 3.93,578
भगवती प्रसाद चौधरी, कांग्रेस 35,269

नौतपा के चौथे दिन आग उगल रही सड़के

वाराणसी,संवाददाता। भीषण गर्मी के कारण सड़कों से लेकर घाट की तरफ भी सन्नाटा दिखा। काफी मजबूरी में ही लोग सड़कों पर निकलते दिखे। थोड़ी–थोड़ी दूरी का सफर करने के बाद छांव का सहारा ले रहे थे।नौतपा के चौथे दिन मंगलवार को गर्मी का नया रिकॉर्ड बन गया। दिन में तीखी धूप के साथ ही गर्म हवाओं के चलने से सड़क पर चलना भी मुश्किल हो गया है। स्थिति यह है कि केवल पैदल ही नहीं दो पहिया हो या चार पहिया से चलने वाले भी गर्मी से बेचैन हो गए। वाराणसी में दिन का तापमान दोपहर 3 तक 47 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया जो कि इस सीजन का सर्वाधिक तापमान कहा जा रहा है।

बीएचयू के मौसम वैज्ञानिक प्रोफेसर मनोज श्रीवास्तव का कहना है कि विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, अभी अगले एक सप्ताह तक गर्मी और धूप से किसी तरह की राहत की उम्मीद नहीं दिख रही है। राजस्थान से आने वाली गर्म हवाओं ने पारा बढ़ा दिया है। यूपी में नौतमा का सितम जारी है। जिलों का तापमान चरम पर पहुंच रहा है। ऐसे में वाराणसी का तापमान 46 डिग्री के लगभग है। सड़कों पर तपिश के कारण लोग गमछा और दुपट्टे का सहारा ले रहे हैं। गंगा किनारे घाट पर भी सन्नाटा दिखा। इक्का–दुक्का पेड़ों के नीचे लोग बैठे दिखे। हालत यह है कि अब युवा भी कॉलेज जाने के लिए कई मर्तबा सोच रहे हैं। वाराणसी में भीषण लू और तपिश का माहौल है। आमजन के साथ जीव–जंतु भी बेहाल दिखे। कोल्ड ड्रिंक्स और जूस की डिमांड बाजार में बढ़ गई है। वहीं, जानवर भीषण गर्मी से बचने के लिए बेचैन नजर आए। गड्ढों में जमा पानी में बैठकर राहत महसूस की। गर्मी के साथ तीखी धूप से ने लोगों को तपा कर रख दिया है। घाट पर तीर्थ–पुरोहित भी काफी कम दिखे। बढ़ती गर्मी और लू के कारण लोग बीमार भी होने लगे हैं। सुबह से ही निकल नहीं तीखी धूप के कारण लोग सुबह ही अपने दुकान और संस्थान में पहुंच जा रहे हैं। दोपहर होते ही दुकान के शटर आधे गिर जा रहे हैं।

हीट वेव और वॉम नाइट के कारण आमजन करवटें बदलकर रात बीता रहा है। पंखे और कूलर की हवाओं से भी राहत नहीं मिल पा रही है। पूर्वांचल के चंदौली, मिर्जापुर, सोनभद्र, भदोही, मऊ, जौनपुर, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर सहित अन्य जिलों में भी हीट वेव का कहर जारी है। मौसम विभाग की ओर से कई जिलों मे हीट वेव का अलर्ट भी जारी किया गया है।

मेहनत पर फिरा पानी फिल्मों को हुई हानि

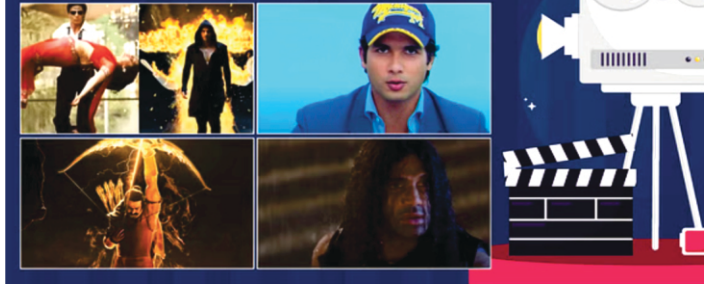

एंटरटेनमेंट डेस्क। हिंदी फिल्मों के दर्शकों की एक शिकायत अक्सर सुनने को मिलती रहती है कि बॉलीवुड में अच्छे वीएफएक्स वाली फिल्में देखने को नहीं मिलती। अभी तक कई फिल्मों में इस तकनीक का इस्तेमाल करके दर्शकों को चकित करने की कोशिश की जा चुकी है, लेकिन अधिकतर फिल्में इसमें कामयाब नहीं हो पाई। 'रुद्राक्ष', 'वाह! लाइफ हो तो ऐसी', 'रा.वन' और 'आदिपुरुष' ऐसी ही फिल्मों में शामिल हैं, जिनका वीएफएक्स देखकर दर्शकों का मजा किरकिरा हो गया था। साल 2004 में एक फिल्म रिलीज हुई थी, जिसे कई लोग भुल चुके होंगे। फिल्म का नाम था– 'रुद्राक्ष'। इसमें संजय दत्त, सुनील शेट्टी, बिपाशा बसु और ईशा कोप्पिकर ने अभिनय किया था। इस फिल्म के वीएफएक्स दर्शकों को लुभाने में नाकाम रहे थे। फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर भी दर्शकों के लिए तरसना पड़ा था।

वाह! लाइफ हो तो ऐसी

संजय दत्त की एक और फिल्म खराब वीएफएक्स वाली मूवी की लिस्ट में शामिल हैं। हम बात कर रहे हैं फिल्म 'वाह! लाइफ हो तो ऐसी' की, जो साल 2005 में रिलीज हुई थी। यह एक फैंटेसी कॉमेडी–ड्रामा फिल्म है। इसमें संजय दत्त के अलावा शाहिद कपूर, अमृता राव और अरशद वारसी ने काम किया था। इसका निर्देशन महेश मांजरेकर ने किया था और उन्होंने ही फिल्म की कहानी भी लिखी थी। इसका वीएफएक्स भी लोगों को पसंद नहीं आया था। खराब वीएफएक्स को समझाने के लिए फिल्म का एक सीन उदाहरण के तौर पर सामने रखा जा सकता है, जिसमें एक भैंस उड़ती हुई कार के बोनट से बाहर निकलती दिखाई देती है।

सुपरस्टार प्रभास की फिल्म 'आदिपुरुष' को वीएफएक्स के कारण खूब ट्रोल किया गया था। फिल्म को बनाने में करोड़ों रुपये खर्च किए गए थे, लेकिन दर्शकों ने इसके वीएफएक्स को सिरे से खारिज कर दिया था। फिल्म का निर्देशन ओम राउत ने किया था। इसमें कृति सेनन और सैफ अली खान ने भी मुख्य भूमिका निभाई थी। शाहरुख खान की फिल्म 'रा.वन' एक साइंस फिक्शन फिल्म है। फिल्म 2011 में रिलीज हुई थी और रिलीज से पहले ऐसा माहौल बना हुआ था कि इसमें कमाल के स्पेशल इफेक्ट्स देखने को मिलेंगे। 26 अक्तूबर को जब 'रा.वन' ने सिनेमाघरों में दस्तक दी तो सारा माहौल ठंडा पड़ गया था। पोस्ट प्रोडक्शन के काम में काफी समय लगा था। टीम ने खूब मेहनत भी की थी, लेकिन दर्शकों पर कोई खास असर नहीं हो पाया।

दूसरी शादी में भी टूटा दिल

टीवी से लेकर बॉलीवुड तक कई ऐसे सितारे हैं जिनका प्यार में कई बार दिल टूट चुका है। वहीं कई ऐसे सितारे भी हैं जिन्होंने एक बार दिल टूटने के बाद फिर से प्यार पर यकीन किया और दूसरी शादी तक कर ली। चलिए आज आपको कुछ ऐसे ही सितारों के बारे में बताते हैं जिनकी दूसरी शादी भी टूट चुकी है।

इस लिस्ट में सबसे पहला नाम टीवी की मशहूर अदाकारा श्वेता तिवारी का आता है। 'कसौटी जिंदगी की' से हर घर में अपनी पहचान बनाने वाली श्वेता की पहली शादी राजा चौधरी के संग हुई थी। दोनों शादी के कुछ साल बाद तलाक लेकर अलग हो गए। उस शादी के टूटने के बाद श्वेता ने अनुभव कोहली के संग दूसरी बार शादी की और उनकी यह शादी भी नहीं चल पाई। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो दोनों ही शादियों में श्वेता घरेलू हिंसा की शिकार हुई थीं। चाहत खन्ना का भी नाम इस लिस्ट में शामिल है। टीवी की यह खूबसूरत अभिनेत्री दो बार शादी कर चुकी हैं, लेकिन दोनों बार उनका घर टूट कर बिखरा ही है। चाहत ने पहली शादी बिजनेसमैन भरत नरसिंघानी से साल 2006 में की थी और दूसरी शादी फरहान मिर्जा के साथ, लेकिन दोनों जगह उनका दिल टूटा ही था।

टीवी की बेहतरीन एक्ट्रेस दीपशिखा नागपाल की भी दोनों शादियां असफल रही हैं। दीपशिखा नागपाल की पहली शादी जीत उपेंद्र से और दूसरी शादी केशव अरोड़ा के संग हुई थी। दीपशिखा आपसी सहमति से दोनों शादियों से बाहर निकल आई और आज एक खुशहाल जिंदगी जी रही हैं।

'बिग बॉस' फेम अभिनेत्री दलजीत कौर इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई हैं। सूत्रों की मानें तो हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम हैंडल से अपने पति निखिल पटेल के खिलाफ कई बातें लिखी थीं। दलजीत कौर ने एक पोस्ट किया था जिसे उन्होंने बाद में डिलीट कर दिया। उस पोस्ट में दलजीत कौर ने लिखा था कि उनके पति उनके साथ अपनी शादी को शादी नहीं मानते हैं। दलजीत कौर की ये दूसरी शादी है और मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो उन दोनों के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है।

फिसल गई थी ये सुपरहिट वेब सीरीज

जेनिफर विंगेट ने दिया था 'द नाइट मैनेजर' के लिए अश्वडिशन रोल न मिलने पर थोड़ी निराश हुईं थी एक्ट्रेस रिजेक्शन के बारे में नहीं सोचती एक्ट्रेस

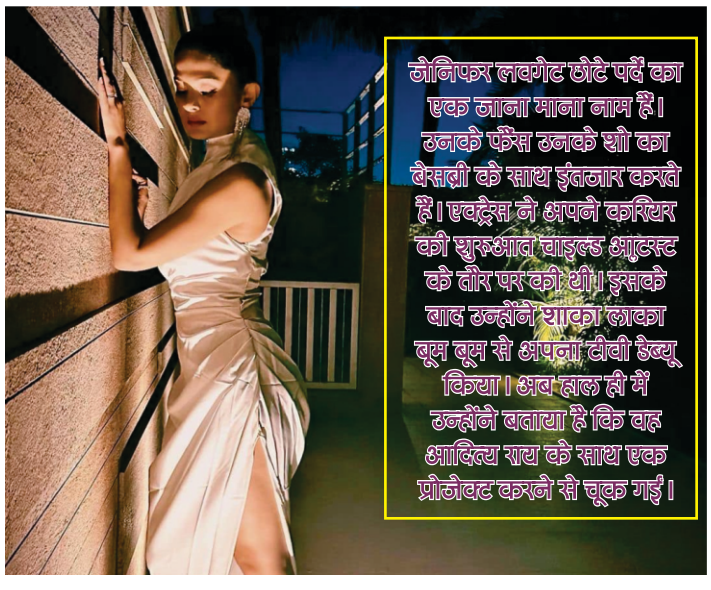

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। छोटे पर्दे की जानी–मानी एक्ट्रेस जेनिफर विंगेट आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने कई सीरियल्स में काम करके फैंस के दिलों में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इसके साथ ही उन्होंने 'राजा को रानी से प्यार हो गया', 'राजा की आएगी बारात' समेत कई फिल्मों में भी काम किया है। हालांकि, बड़े पर्दे पर काम करके अभी उन्हें वो मुकाम हासिल नहीं हुआ, जो वह चाहती हैं।

अब हाल ही में एक इंटरव्यू में जेनिफर ने यह खुलासा किया कि आदित्य रॉय कपूर, अनिल कपूर और शोभिता धुलिपाला की फेमस वेब सीरीज 'द नाइट मैनेजर' के लिए उन्होंने भी ऑडिशन दिया था, लेकिन उनको वह रोल नहीं मिला, जिसकी वजह से उन्हें निराशा का सामना करना पड़ा था।

'कावेरी' के किरदार के लिए दिया था अश्वडिशन

टाइम्स नाउ के साथ बातचीत में एक्ट्रेस ने खुलासा करते हुए कहा कि मैंने 'द नाइट मैनेजर' के लिए ऑडिशन दिया था, लेकिन मुझे वह किरदार भूमिका नहीं मिला। ऐसा बहुत बार हुआ है। इसके साथ ही जेनिफर ने यह भी बताया कि उन्होंने इस सीरीज में शोभिता धुलिपाला ने जो कावेरी का किरदार किया था, उसके लिए ऑडिशन दिया था, जिसमें आदित्य भी थे, लेकिन कोई बात नहीं।

रिजेक्शन के बारे में नही सोचती जेनिफर

इंटरव्यू में जेनिफर विंगेट ने बताया कि वह रिजेक्शन के बारे में बहुत ज्यादा नहीं सोचती हैं। एक्ट्रेस ने कहा कि बेशक आप परेशान और दुखी महसूस कर सकते हैं, लेकिन लाइफ चलती रहती है और कुछ बेहतर होता है। मैं सच में यह मानती हूं कि हर बार जब मेरे लिए कुछ काम नहीं करता है, तो कुछ और भी बेहतर होता है।

आदित्य ने किया था डिजिटल डेब्यू

बीते साल रिलीज हुई वेब सीरीज 'द नाइट मैनेजर' से आदित्य रॉय कपूर ने अपना डिजिटल डेब्यू किया था। डिज्नी प्लस हॉटस्टार की इस सीरीज में आदित्य के अलाव शोभिता और अनिल कपूर समेत कई स्टार्स थे।

तपती रेत पर चलकर पृथ्वीराज कपूर ने फिल्माया था सीन

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। पृथ्वीराज कपूर हिंदी सिनेमा को वो अभिनेता रहे, जिनका नाम अभिनय की दुनिया में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाता है। आज रणबीर कपूर और करीना कपूर जैसे कलाकार कपूर खानदान का नाम बॉलीवुड में रोशन कर रहे हैं, लेकिन इसका आगाज पृथ्वीराज कपूर ने कई दशक पहले ही कर दिया था। 29 मई 1972 यानी आज ही के दिन 52 साल पहले पृथ्वीराज (त्तपजीअपतंर झंचववत क्मंजी ।ददपअमतेंतल) ने आखिरी सांस ली थी।

रिश्तेदारों से उधार पैसे लेकर मुंबई आए थे पृथ्वीराज

पृथ्वीराज कपूर का जन्म आजाद भारत से पहले 3 नवंबर 1906 को पाकिस्तान के लायलपुर में हुआ था। अभिनय के क्षेत्र में अपनी किस्मत अजामाने के लिए वह किशोरावस्था में मुंबई आए थे। इसके पीछे की कहानी रोचक है क्योंकि उस वक्त पृथ्वीराज के परिवार की आर्थिक स्थिति कुछ ज्यादा ठीक नहीं थी। ऐसे में वह अपने रिश्तेदारों से पैसे उधार लेकर मायानगरी में पहुंचे। पेट पालने के लिए उन्होंने यहां नौकरी भी शुरू कर दी थी, लेकिन कहते हैं कि मुसाफिर को एक न एक दिन अपनी मंजिल मिल ही जाती है और आलम आरा मूवी से उन्होंने इंडस्ट्री में डेब्यू कर लिया। इसके बाद 1934 में फिल्म सीता से उन्होंने हिंदी सिनेमा में अपनी छाप छोड़ी और फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

थिएटर से था अधिक जुड़ाव

एक कलाकार होने के नाते पृथ्वीराज कपूर का रंग मंच के थिएटर से काफी अधिक लगाव था। नाटकों के प्रति अधिक रूचि के कारण साल 1944 में उन्होंने अपने नाम से एक थिएटर की स्थापना कर डाली।

हिंदी सिनेमा के सरताज के तौर पर पृथ्वीराज कपूर को याद किया जाता है। 29 मई को उनकी पुण्यतिथि जाती थी। 52 साल पहले आज के दिन मुगल ए आजम के शहंशाह ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। उनसे जुड़े कई रोचक किस्से हैं लेकिन क्या आपको पता है कि वह रिश्तेदारों से पैसे उधार लेकर मुंबई आए थे।

लहदी सिनेमा के दिग्गज कलाकार रहे थे पृथ्वीराज कपूर मुगल ए आजम में निभाया था आइकानिक रोल दिलचस्प है उनके संघर्ष के दिनों की कहानी

100 करोड़ी देने के बाद

अब धोती पर ब्लेजर पहन तमन्ना ने मचाया बवाल

चिलचिलाती गर्मी में वायरल नया लुक

एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया नई फिल्म अरनमनई 4 को लेकर खूब चर्चाओं में बनी हुई हैं. तमन्ना भाटिया और राशी खन्ना स्टारर अरनमनई 4 तेलुगु और तमिल में 100 करोड़ से ज्यादा की कमाई कर चुकी है. इन्हीं सब के बीच तमन्ना भाटिया ने अपनी नई फोटोज सोशल मीडिया पर शेयर की हैं. जिन्हें देख फैंस तारीफों के पुल बांधते नहीं थक रहे हैं. आइए, यहां स्लाइड्स में देखते हैं तमन्ना भाटिया की नई फोटोज...

तमन्ना भाटिया ने हाल ही में अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर लेटेस्ट फोटोज शेयर की हैं. नई फोटोज में तमन्ना भाटिया ने ऐसा लुक कैरी किया है, जिसके चारों तरफ चर्चे होने लगे हैं. तमन्ना भाटिया ने धोती पर ब्राउन कलर का ब्लैजर पहना है।

स्पोर्ट्स डेस्क। टी20 विश्व कप का आगाज दो जून (भारतीय समयानुसार) से होने जा रहा है। टीम इंडिया ने पांच जून को आयरलैंड के खिलाफ अपने उद्घाटन मैच से पहले न्यूयॉर्क में ट्रेनिंग शुरू कर दी है। वेस्टइंडीज और अमेरिका की सह–मेजबानी में खेले जाने वाले इस विश्व कप का फाइनल 29 जून को खेला जाएगा। मेन इन ब्लू की टीम अपना एकमात्र वार्म–अप मैच एक जून को न्यूयॉर्क के नसाऊ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में बांग्लादेश के खिलाफ खेलेगी। वहीं, नताशा स्टैनकोविच से अनबन की खबरों के बीच टीम इंडिया के उपकप्तान हार्दिक पांड्या भी न्यूयॉर्क पहुंच गए हैं। भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और हार्दिक ने इंस्टाग्राम पर वार्मअप की तस्वीरें साझा की हैं। बुमराह द्वारा शेयर किए गए पोस्ट में खुद बुमराह, तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह, ऑलराउंडर अक्षर पटेल, रवींद्र जडेजा, शिवम दुबे और टी20 में नंबर एक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव दिखाई पड़ रहे हैं। वहीं, हार्दिक द्वारा शेयर किए गए पोस्ट में हार्दिक के अलावा शुभमन गिल, दुबे, द्रविड़ और अक्षर नजर आ रहे हैं। बुमराह और हार्दिक, दोनों का फॉर्म यह तय करेगी कि मेन इन ब्लू अपने अभियान में कितना आगे जाएंगे। चोट की वजह से 2022 टी20 विश्व कप नहीं खेलने वाले बुमराह भारत के लिए बेहद अहम होंगे।

बुमराह 2016 और 2021 टी20 विश्व कप खेल चुके हैं और इसके 10 मैचों में वह 22.54 की औसत और 21.0 के स्ट्राइक रेट से 11 विकेट ले चुके हैं। 10 रन देकर दो विकेट उनकी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी रही है। इस तेज गेंदबाज ने हाल ही में समाप्त हुए आईपीएल में और पिछले साल हुए वनडे विश्व कप में शानदार प्रदर्शन किया था। भले ही उनकी फ्रेंचाइजी मुंबई इंडियंस 14 मैचों में सिर्फ चार जीत के साथ अंतिम स्थान पर रही, लेकिन उन्होंने 13 मैचों में 16.80 की औसत और सिर्फ 6.48 की इकोनॉमी रेट से 20 विकेट लिए, जिसमें 5/21 के सर्वश्रेष्ठ आंकड़े थे। वह टूर्नामेंट में तीसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज थे। वहीं, हार्दिक का फॉर्म टीम इंडिया के लिए जरूर चिंता का विषय है। वह आईपीएल में न तो बल्लेबाजी और न ही गेंदबाजी में कुछ कमाल दिखा पाए थे। 13 पारियों में हार्दिक ने 216 रन बनाए थे। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 143.04 का रहा था। वहीं, गेंदबाजी में वह 11 विकेट ले पाए थे। 31 रन देकर तीन विकेट उनकी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी रही थी। हालांकि, भारत के लिए चिंता की बात यह है कि विराट कोहली अब भी मुंबई में हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, वह मंगलवार को मुंबई के एक रेस्त्रां के बाहर पत्नी अनुष्का शर्मा और स्पोर्ट्स प्रेजेंटर गौरव कपूर के साथ दिखाई पड़े। उनके साथ जहीर खान और सागरिका घटगे भी दिखाई दिए। यानी कोहली अब तक न्यूयॉर्क के लिए नहीं निकल सके हैं। आईपीएल में उनकी टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के एलिमिनेटर में बाहर हो जाने के बावजूद कोहली 25 जून को पहले बैच के साथ न्यूयॉर्क के लिए रवाना नहीं हुए। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, वह गुरुवार को रवाना हो सकते हैं। हालांकि, वह बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच खेलेंगे या नहीं, इसकी कोई जानकारी नहीं है।

भारत अपने टी20 विश्व कप अभियान की शुरुआत पांच जून को आयरलैंड के खिलाफ न्यूयॉर्क स्टेडियम में करेगा। वहीं, भारत और पाकिस्तान के बीच सबसे बहुप्रतीक्षित ब्लॉकबस्टर मैच नौ जून को होगा। इसके बाद टीम ग्रुप ए में टूर्नामेंट के सह–मेजबान अमेरिका (12 जून) और कनाडा (15 जून) से खेलेगी। टूर्नामेंट में भारत का लक्ष्य आईसीसी ट्रॉफी का सूखा खत्म करना होगा। टीम इंडिया ने पिछली बार 2013 में आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी जीती थी। तब से भारत 2023 में वनडे विश्व कप के फाइनल, 2015 और 2019 में वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल, 2021 और 2023 में आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल, 2014 में टी20 विश्व कप के फाइनल, 2016 और 2022 में टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में पहुंचा है, लेकिन आईसीसी ट्रॉफी जीतने में नाकाम रहा है।

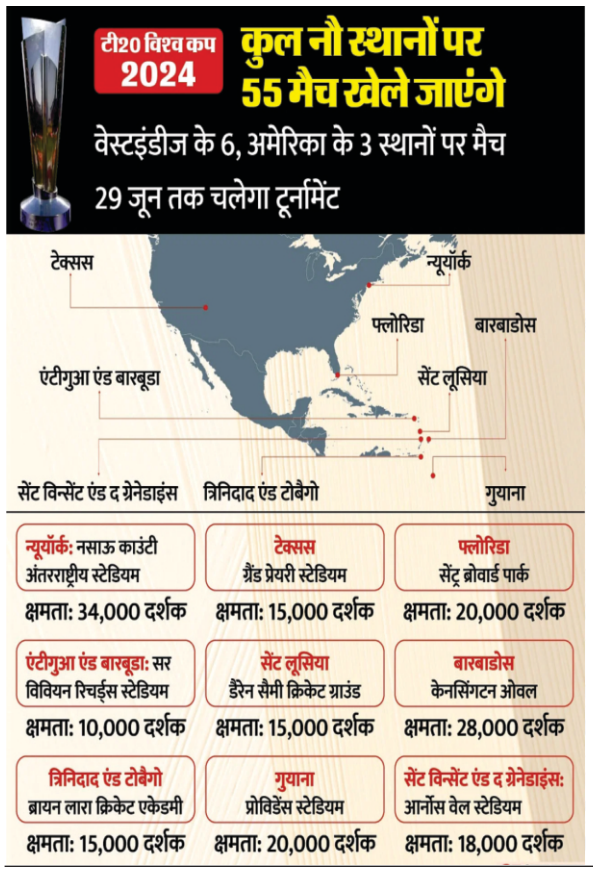

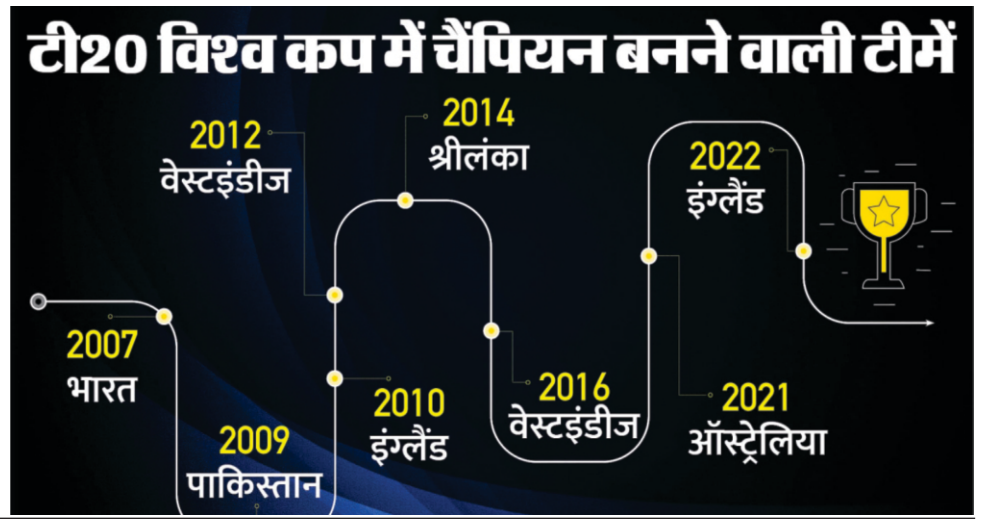

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।